ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 24 अगस्त 2025

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 24 अगस्त 2025 से 30 अगस्त 2025

भाद्रपद शु. 01 ● वि० सं०-2082 ● वर्ष 66, अंक 34, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 ● सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रू. ● वार्षिक शु. 300/- रू.

डी.ए.वी. खारघर की छात्राओं ने राष्ट्ररक्षकों को बाँधा रक्षा सूत्र

डी.ए.वी. इंटरनेशनल स्कूल, खारघर के 30 विद्यार्थियों ने 'रक्षाबंधन' के अवसर पर देशप्रेम व कृतज्ञता की मिसाल प्रस्तुत की। कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्र के वीर बलकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त करना और उनके त्याग, साहस तथा समर्पण को नमन करना था।

विद्यार्थी राखी, मिठाई और हस्तनिर्मित धन्यवाद–कार्ड लेकर गंतव्य की ओर अग्रसर हुए। जहाँ अधिकारियों ने उनका स्नेहपूर्ण स्वागत किया। विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और सम्मान के साथ अधिकारियों की कलाई पर राखी बाँधी।

धन्यवाद उद्बोधन तथा बलिदान एवं सेवा की भावना पर आधारित कविता ने भावविभोर कर दिया। सुंदर धन्यवाद–कार्ड अधिकारियों को भेंट किया गया।

एक अविस्मरणीय अनुभव था जिसने यह दृढ़ विश्वास संचारित किया कि राष्ट्र की रक्षा केवल सीमा पर तैनात सैनिकों का ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का पावन कर्तव्य है।

प्रधानाचार्या महोदया श्रीमती सीमा मेहंदीरत्ता ने इस अवसर पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्हें राष्ट्रप्रेम, सेवा–भाव और त्याग जैसे जीवन–मूल्यों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया।

आर्यसमाज डी.ए.वी. नारायणगढ़ में हुआ चतुर्वेदशतक पारायण यज्ञ

आर्य समाज डी.ए.वी.पब्लिक (सीनियर सेकेंडरी) विद्यालय में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार वेद प्रचार सप्ताह के अंतर्गत चतुर्वेदशतक पारायण यज्ञ का आयोजन हर्षोल्लास से किया गया।

प्रधानाचार्य डॉ आर पी राठी, मंत्रों के उच्चारण से वातावरण में शुद्धि होती है और पर्यावरण की भी रक्षा होती है। हमें घर में प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठानों पर यज्ञ करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द जी ने वेदों मार्ग पर चलने के लिए आर्य जाति को प्रेरित किया। हमारा भी यह कर्तव्य है कि हम उनके द्वारा बताए

शिक्षकों व बच्चों ने चारों वेदों में से चुने हुए मंत्रों से विशेष आहुतियाँ डालीं। डॉ राठी ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम वेद सप्ताह के अंतर्गत आयोजित किया जा रहा है। वेद रास्ते पर आगे बढ़ें तथा अपने जीवन को सफल बनाएँ।

विद्यालय के शिक्षक श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने शांति पाठ की व्याख्या करते हुए मंत्रों का महत्त्व बताया।

डी.ए.वी. न्यू पनवेल (मुंबई) ने जीती समूहगान प्रतियोगिता

भारत विकास परिषद, नवीन पनवेल शाखा ने 10 अगस्त 2025 को शाखा स्तर (प्रथम चरण) पर राष्ट्रीय समूह गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया। ए.वी. पब्लिक स्कूल, नवीन पनवेल ने अपनी असाधारण प्रतिभा और समूह भावना का परिचय देते हुए, 'हिंदी समूह गायन प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान और 'संस्कृत समूह गायन प्रतियोगिता' में

इस प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री अच्युत पालव उपस्थित थे। इसके अलावा, प्रतिभा कुलकर्णी, वंदना सहस्त्रबुद्धे, चैत्राली जोशी आदि गणमान्य व्यक्तियों ने प्रतियोगिता के लिए निर्णायक की भूमिका निभाई।

इस प्रतियोगिता में कुल 21 विद्यालयों ने भाग लिया। जिसमें डी. दूसरा स्थान प्राप्त किया। दोनों समूहों ने संयुक्त अंक सूची में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की।

प्रधानाचार्य श्री.सुमंत घोष ने सभी प्रतिभागियों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी और प्रान्त स्तरीय गायन प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएँ दीं।

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 24 अगस्त 2025 से 30 अगस्त 2025

आओ, देवों के मार्ग पर चलें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

आ देवानामपि पन्थामगन्म, यच्छक्नवास तदनुप्रवोढुम्।
अग्निर्विद्वान्त्स यजात् स इद्धोता, सोऽध्वरान्त्स ऋतून् कल्पयाति।।

अथर्व 16.56.3

ऋषिः **ब्रह्मा।** देवता **अग्निः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● (**अपि**) क्या (**देवानां**) देवों के (**पन्थां**) मार्ग पर (**आ– अगन्म**) [हम] चलें? [हाँ], (**यत्**) यदि (**तत् अनुप्रवोढुम्**) उस पर स्वयं को चलने में (**शक्नवाम**) समर्थ हों। (**अग्निः**) आत्मा (**विद्वान**) विद्वान् है, (**सः**) वह (**यजात्**) यज्ञ करे, (**सः**) वह (**इत्**) सचमुच (**होता**) होम–निष्पादक है। (**सः**) वही (**अध्वरान्**) यज्ञों को और (**सः**) वही (**ऋतून्**) ऋतुओं को (**कल्पयाति**) रचाये।

● आओ, हम देवों के मार्ग पर चलें। यज्ञ के तंतु से बंधे रहना ही देवों का मार्ग है। देखो,ये सूर्य, चन्द्र, अग्नि, पृथिवी, ऋतु, संवत्सर आदि देव कैसे 'यज्ञ' के मार्ग पर चल रहे हैं। कभी उनके यज्ञ–पालन में व्यतिक्रम नहीं होता। शरीर में भी मन, बुद्वि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि देव कैसे संगठित हाक देवयान का अवलम्बन कर शरीर–यज्ञ को चला रहे हैं। समाज में भी 'देव' पदवी को पाये हुए महापुरुष 'यज्ञ' के ही पथ पर चल रहे हैं। और, सबसे बड़ा देवों का देव परमात्मा भी निरन्तर देव–मार्ग पर चलता हुआ इस ब्रह्मांड–यज्ञ का सम्पादन कर रहा है। हम चाहते हैं कि हम भी इस देव–मार्ग के पथिक बनें। क्या तुम कहते हो कि इस मार्ग पर चलना अति कठिन है, तलवार की धार पर चलने के समान है, अतः पहले अपनी शक्ति को तोल लो कि तुम इस पर स्थिर रह भी सकोगे या नहीं, उसके पश्चात् इस मार्ग पर पग बढ़ाना? सुनो, हमने अपने सामर्थ्य को भलीभांति परख लिया है। हमारा आत्मा 'अग्नि' है, अग्रणी है, तेज का पुंज है, ज्योतियों की ज्योति है। वह 'विद्वान' है, देवों की राह पर चलना और चलाना जानता है। अतः हमें देव–प्रदर्शित यज्ञ–मार्ग भटक जाने का कोई भय नहीं है। हम निश्चिंत होकर उसके हाथों में अपनी 'यज्ञ' की पतवार सौंप रहे हैं। वह 'होता' है, यज्ञ– निष्पादन में कुशल है,संस्कृत हवि का होम करने में निष्णात है। वह जानता है कि यज्ञ को 'अध्वर' अर्थात् हिंसा–रहित ही होना चाहिए। भद्रजनों को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया यज्ञ यज्ञ नहीं है। हमारा आत्मा 'अध्वर' यज्ञों को रचाये और वही यह भी देख कि किस यज्ञ के लिए कौन–सी ऋतु, कौन–सा समय उपयुक्त है क्योंकि काल–अकाल का विचार किये बिना प्रारम्भ किया गया यज्ञ सफल नहीं होता। आओ, हम देव–पथ के पथिक बनें।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्वज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने दाक्षणिक, वैकारिक और प्राकृतिक तीन प्रकार के बन्धों से छूटने के उपाय बताये।

बात को आगे बढ़ाते हुए स्वामी जी ने बताया कि जैसे ही आत्मा का जड़ तत्त्वों से सम्बन्ध हुआ वैसे ही पाँच प्रकार की अविद्या – अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, और अभिनिवेश ने इसे आ घेरा।

एक तथ्य और बताया कि जब पुरुष बुद्धि को ही आत्मा समझ लेता है तभी वह दुःखी, मूढ़, शान्त, सुखी होने की बात कर सकता है।

बुद्धि के आठ रूप और तीन वृत्तियों की चर्चा की। ये सारे रूप और वृत्तियाँ बुद्धि में वर्तमान रहती है, जब एक रूप प्रधान होता है तो विरोधी रूप और वृत्ति दबे रहते हैं। सत्त्व की प्रबलता से धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य की प्रबलता होती है।

तीन शरीरों – स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर – की बात कहनी आरम्भ की। पंच कोशों, पंच प्राणों, 11 इन्द्रियों और संधसंचालक आत्मा की बात की।

यही सूक्ष्म शरीर मानव आत्मा को भिन्न–भिन्न योनियाँ में कर्मानुसार लिए फिरता है। अथर्व–5.1.2 से इस बात की पुष्टि की। महर्षि दयानन्द द्वारा इस कृत मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की।

सूक्ष्म शरीर को अत्यन्त पवित्र बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए निरुक्तकार को उद्धृत किया। परमात्मा सर्वदा मानव का पथ–प्रदर्शन करता रहता है। आत्मा के भीतर बुरे काम करने में भय, शंका, लज्जा और अच्छे कर्म करने में अभय, निस्शंकता और आनन्दोत्साह पैदा होते हैं। परमात्मा की इस आवाज़ के सुनने का अभ्यास करना चाहिए।

..... अब आगे

कारण शरीर

तीसरे शरीर का नाम कारण शरीर है। प्रकृति जब विकृत होती है तो हरएक जीवात्मा को इसी प्रकृति का एक अत्यन्त सूक्ष्म भाग मिल जाता है। यह प्रकृतिरूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है। आत्मा इन तीन शरीरों से अलग है। मनुष्य जब सुषुप्ति–अवस्था में आ जाता है तो उस समय केवल कारण शरीर में कार्य होता है।

जीवात्मा क्या है ?

जब आत्मा इन तीनों शरीरों से पृथक् है तो फिर वह क्या है ? यह प्रश्न स्वयमेव सामने आ जाता है। यह कारण, सूक्ष्म तथा स्थूल शरीर किसके लिए बनाये गये हैं ? जब चारपाई वा पलंग बनाने के लिए पाये, बाहु, सेरु, रस्सी या निवार एकत्र किये जाते हैं और जब चारपाई तैयार हो जाती है तो यह किसी के लिए होती है। इसी प्रकार यह शरीर का संघात भी किसी के लिए होता है। संघात बिना प्रयोजन के नहीं। अब जिसके लिए यह शरीर बना, उसीको जीवात्मा कहते हैं। यह जीवात्मा सत्, चित् है। जगत् के भोग भोगने के और दुःखों की प्रत्यन्त निवृत्ति करके मोक्ष प्राप्त करने के लिए मानव–शरीर के साथ इसका सम्बन्ध होता है। इस आत्मा का अपना निज–रूप कभी बिगड़ता नहीं, सदा एकरस रहता है, ज्ञानवान् है। जड़रूप प्रकृति के बने 24 तत्त्वों के साथ मिलकर जब यह आत्मा इन्हीं तत्त्वों में से ही किसी जड़ तत्त्व में आत्म– बुद्धि कर लेता है, तब दुःखी होता है। चारपाई पर लेटा हुआ एक मनुष्य यदि यह कहने लग जाए कि मैं चारपाई हूँ, तो बुद्धिमान् उस पर हँसेंगे। ऐसे ही जो मनुष्य यह कहने लगे कि मैं शरीर हूँ, तो उसे बुद्धिमान् क्या कहेंगे ? शरीर के साथ सम्बन्धित आत्मा सुखी भी होता है, दुःखी भी; हँसता भी है और रोता भी है; स्वस्थ भी होता है और रोगी भी। परन्तु जब जीवात्मा ध्यान अवस्था में पहुँचकर प्रत्यक्ष देख लेता है कि मैं तो प्रकृति और प्रकृति से बने सारे तत्त्वों तथा पदार्थों से सर्वथा पृथक् हूँ, तब वह इस

डी.ए.वी. एनयूपीपीएल कानुपर ने नुक्कड़ नाटक से जनसाधारण को किया जागरूक

डी.ए.वी. एनयूपीपीएल पब्लिक स्कूल के छात्रों द्वारा साइबर सेफ्टी (डिजिटल जागरूकता) बढ़ाने के उद्देश्य से एक प्रभावशाली नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। नुक्कड़ नाटक विद्यालय परिसर के साथ–साथ हमीरपुर और घाटमपुर के प्रमुख स्थलों पर भी प्रस्तुत किया गया।

नुक्कड़ नाटक में इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग, ऑनलाइन ठगी से बचाव, सोशल मीडिया पर सावधानी, साइबर बुलिंग से बचाव तथा डिजिटल जिम्मेदारियों के महत्व को सरल, रोचक और मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत किया गया। संवाद, गीत और व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से संदेश को इतना प्रभावी बनाया गया कि हर दर्शक तक इसकी गंभीरता स्पष्ट रूप से पहुँची।विशेष उल्लेखनीय बात यह रही कि इस पहल को हमीरपुर पुलिस, स्थानीय लोग एवं उपस्थित अधिकारियों ने भी भरपूर सराहा। नाटक में छात्रों ने अपनी जीवंत अभिनय कला और उत्कृष्ट प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

नुक्कड़ नाटक ने न केवल जागरूकता फैलाई, बल्कि यह संदेश भी दिया कि सुरक्षित डिजिटल व्यवहार अपनाना हम सभी की जिम्मेदारी है।

डी.ए.वी. सेक्टर 3, कुरुक्षेत्र में नन्हे-मुन्हों ने मनाया रक्षा बंधन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सेक्टर 3 कुरुक्षेत्र में नन्हें सितारों ने रक्षाबंधन का खूबसूरत त्योहार बहुत खुशी और उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर की भावना को उजागर करते हुए बच्चों ने कई दिल छू लेने वाली गतिविधियों में भाग लिया, जिससे विद्यालय प्रांगण प्यार और हँसी से खुशी से गया।

छात्रों ने स्कूल के सुरक्षा गार्ड, सहायकों, ड्राइवरों और पुलिसकर्मियो की कलाई पर राखी बांधकर उनकी दैनिक देखभाल और सुरक्षा को स्वीकार करते हुए अपना आभार व्यक्त किया।

छात्रों ने अपने भाई–बहनों के लिए सुंदर कार्ड बनाए, प्रत्येक में अपना प्यार और रचनात्मकता डाली। रंगीन सजावटी वस्तुओं का उपयोग करके अपनी स्वयं की राखियाँ बनाकर अपने कलात्मक पक्ष का प्रदर्शन किया, जिससे उत्सव में एक व्यक्तिगत स्पर्श जुड़ गया।

शिक्षकों ने भी रक्षाबंधन के महत्व और मूल्यों को साझा करते हुए छात्रों को इस परंपरा के पीछे के गहरे अर्थ को समझाया। यह एक रचनात्मकता, जुड़ाव और सांस्कृतिक सीख से भरा दिन था। स्कूल प्राचार्या श्रीमती गीतिका जसूजा ने भाई बहन के इस पवित्र त्योहार की सब बच्चों और स्टाफ सदस्यों को बधाई दी।

डी.ए.वी. जयपुर में श्रावणी उपाकर्म

डी.ए.वी. विद्यालय जयपुर में श्रावणी उपाकर्म (रक्षासूत्र बन्धन) कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यालय के प्राचार्य श्रीमान अशोक कुमार शर्मा जी ने बताया भारतीय संस्कृति में रक्षासूत्र बाँधना अर्थात् रक्षा करने का प्रण लेना है। प्रचलित सामाजिक परम्परा में यह मात्र बहन–भाई का पर्व माना जाता है, परन्तु वैदिक परम्परा में इसे शिक्षा प्रदान करने वाले ब्राह्मण वर्ग के द्वारा अन्य वर्गों यथा क्षत्रिय, वैश्यादि को बाँधा जाता था। जिसका अभिप्राय उन्हें शास्त्रों का सही–सही ज्ञान प्रदान करते हुए पापकर्म से बचाना होता था।

इस पर्व के माध्यम से रक्षासूत्र बाँधते हुए हम शिक्षकगण अपने छात्रों को उचित–अनुचित का ज्ञान प्रदान करते हुए उनकी हर प्रकार से रक्षा का प्रण लेते हैं। जिससे हमारे द्वारा इन बच्चों का भविष्य सुरक्षित निश्चित हो सके।

इसी भाव को मन में ग्रहण करते हुए उन्होंने सभी अध्यापकों से रक्षासूत्र बाँधने की प्रक्रिया प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में वैदिक मंत्रोच्चारपूर्वक पूर्ण करवाई।

इस प्रकार के वैदिक संस्कृति से युक्त वातावरण प्रदान करने व छात्रों में भारतीय संस्कृति व संस्कारों को रोपित करने के लिए अभिभावकों ने पूरे कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की व विद्यालय प्रबन्धन का आभार जताया।

आर्य समाज 150 मानव सेवा के स्वर्णिम वर्ष 1875 - 2025

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2025

डी.ए.वी. समस्तीपुर में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज बिहार के तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल समस्तीपुर के द्वारा वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत विद्यालय के धर्माचार्य शास्त्री जी के द्वारा प्रतिदिन चारों वेदों के विशिष्ट मित्रों से विशेष आहुतियों के द्वारा हवन–यज्ञ करवाया गया। इस पवित्र हवन–यज्ञ कार्यक्रम में अधिकाधिक अध्यापकों एवं बच्चों ने भाग लिया। प्रतिदिन हवन के पश्चात भजन एवं प्रवचन भी हुए।

विद्यालय के प्राचार्य श्री नीरज कुमार सिंह जी ने बताया कि आर्यसमाज एवं डी.ए.वी. संस्थाओं के माध्यम से वेद प्रचार के जो कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, उसे 'श्रावणी उपाकर्म ' नाम

दिया गया है। 'उपाकर्म' का अर्थ है किसी चीज का शुभारंभ करना। प्रतिवर्ष श्रावण महीने में वेद प्रचार के कार्य का शुभारंभ किया जाता है और यह निरंतर चलता रहे और इसका प्रचार–प्रसार होता रहे, यही इसका मुख्य उद्देश्य है।

उन्होंने बताया कि महर्षि दयानंद एवं अन्य महापुरुषों की चित्र नहीं बल्कि चरित्र की पूजा करनी चाहिए।

विद्यालय में वैदिक मंत्र उच्चारण, श्लोक उच्चारण, आर्यसमाज के नियम, चित्रकला, भजन इत्यादि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

विद्यालय के शिक्षक श्री आर. दुबे एवं श्री शशांक शेखर सिंह के द्वारा महर्षि दयानंद एवं वेद के विषय में विस्तार रूप से चर्चा की गई।

डी.ए.वी. नाभा में आर्यसमाज के 150 वर्ष पूरे होने पर विशेष यज्ञ

डी.ए.वी. सेंट पब्लिक स्कूल नाभा के प्रांगण में दिनांक 13.08.2025 को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्मवर्ष एवं आर्यसमाज के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 9 बजे वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य, अध्यापकगण, छात्र–छात्राएँ एवं गणमान्य अतिथि इस अवसर पर उपस्थित रहे।

यज्ञ का संचालन आर्य समाज के आचार्य श्री विवेक ने किया, जिन्होंने वैदिक रीति से आहुतियाँ दिलवाईं और स्वामी दयानन्द जी के जीवन, उनके वेद प्रचार, समाज सुधार और आर्य समाज की स्थापना के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। आचार्य जी ने बताया कि स्वामी जी का नारा 'वेदों की ओर लौटो' आज भी समाज को सही दिशा दिखाता है।

विद्यार्थियों ने भजन एवं वैदिक मंत्रों का सामूहिक गान किया। सभी ने राष्ट्र एवं समाज की सेवा का संकल्प लिया।

प्रधानाचार्य श्री संजय कुमार ठाकुर जी ने महर्षि दयानंद जी के जीवन परिचय पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को महर्षि दयानंद जी की शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करने के लिए प्रेरित किया।

डी.ए.वी. सैक्टर–49 में वेद सप्ताह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, उप्पल साउथ एंड, सैक्टर – 49, गुरुग्राम में वेद सप्ताह मनाया गया।

वेद सप्ताह के अंतर्गत विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया। अध्यापिकाओं एवं विद्यार्थियों ने मिलकर नीम, पीपल, अशोक, अमरूद आदि के पौधे लगाए। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताया गया और पौधों की देखभाल की जिम्मेदारी भी तय की गई।

सप्ताह भर सामूहिक ध्यान सत्र का आयोजन किया गया। श्रीमती गार्गी चटर्जी के मार्गदर्शन में सभी ने ध्यान एवं हल्के योगाभ्यास किए। जिससे मानसिक शांति, एकाग्रता और सकारात्मक सोच विकसित करने का अनुभव प्राप्त हुआ।

इसी दौरान रक्षाबंधन का पर्व भी उत्साहपूर्वक मनाया गया। बच्चों ने इस अवसर पर अपने हाथों से रखियाँ बनाई और हमारे देश के वीर सैनिकों को भेजीं तथा उनके प्रति कृतार्थ भाव प्रकट करते हुए लघु संदेश भी प्रस्तुत किए गए।

विद्यालय में क्रमानुसार प्रत्येक कक्षाओं के द्वारा पवित्र वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ आचार्यों के मार्गदर्शन में हवन सम्पन्न किया गया।

इस पूरे आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जोड़ना, पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना तथा मानसिक और आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करना था।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**